Volume : 3 | Issue : 6 | June 2014 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Management

"Bhartiy Shahity Me Vegnanik Evam Samajik Chetna: Ek Adhyatmik Adhyayan"

''भारतीय साहित्य में वैज्ञानिक एवं सामाजिक चेतना : एक आध्यात्मिक अध्ययन''

Shalini Yadav	Research Scholar, Shri Venkateshwara University, Gajraula
Renu Gupta	D.S.N.P.G. College, Unnao
Rajesh Dubey	Director, PERI, Lucknow, UP
Kanchan	PERI, Lucknow, UP

ABSTRACT

भारतवर्षअनेकभाषाओंकावशिालदेशहै - उत्तर-पश्चमिमेंपंजाबी, हन्दिीऔरउर्दू; पूर्वमेंउड़यिा, बंगालमेंअसमयिा; मध्य-पश्चमिमेंमराठीऔरगुजरातीऔरदक्षणिमेंतमलि, तेलुगु, कन्नड़औरमलयालम।इनकेअतरिक्तिकतपियऔरभीभाषाएंहैंजनिका साहत्यिकिएवंभाषावैज्ञानकिमहत्त्वकमनहींहै- जैसेकश्मीरी, डोगरी, सधिी, कोंकणी, तूरूआदि।इनमेंसेप्रत्येकका, वशिषत: पहलीबारहभाषाओंमेंसेप्रत्येकका, अपनासाहत्यिहैजोप्राचीनता, वैवध्यि

KEYWORDS :

गुणऔरपरमिाण-

सभीकीदृष्टसिेअत्यंतसमृद्धहै।यदआिधुनकिभारतीयभाषाओंकेहीसंपूर्णवाङ्मयकासंचयनकयिाजायेतोवहयूरोपकेसंकलतिवाङ्मयसेकसीभीदृष्टसिेकमनहींहोगा।वैदकिसंस्कृत, संस्कृत, पालि, प्राकृतोंऔरअपभ्रंशोंकासमावेशकरलेनेपरतोउसकाअनंतवस्तिारकल्पनाकीसीमाकोपारकरजाताहै- ज्ञानकाअपारभंडार, हदिमहासागरसेभीगहरा, भारतकेभौगोलकिवस्तिारसेभीव्यापक, हमिालयकेशखिरोंसेभीऊँचाऔरब्रह्मकीकल्पनासेभीअधकिसूक्ष्म।

1- प्रस्तावना:

सभीसाहत्यिोंमेंअपनी-अपनीवशिष्टिवभूतयिाँहैं।तमलिकासंगम-साहत्यि, तेलगुकेद्वि-अर्थीकाव्यऔरउदाहरणतथाअवधान-साहत्यि, मलयालमकेसंदेश-काव्यएवंकीर-गीत (कलप्पिाटु) तथामणप्रिवालम्शैली, मराठीकेपवाड़े, गुजरातीकेअख्यानऔरफागु, बँगलाकामंगलकाव्य, असमयिाकेबड़गीतऔरबुरंजीसाहत्यि, पंजाबीकेरम्याख्यानतथावीरगति, उर्दूकीगजलऔरहदिीकारीतकिाव्यतथाछायावादआदअिपने-अपनेभाषा–साहत्यिकेवैशष्ट्यिकेउज्ज्वलप्रमाणहैं।भारत की प्रत्येक भाषा के साहत्यि का अपना स्वतंत्र और प्रखर वैशष्ट्यि है जो अपने प्रदेश के व्यक्तत्वि से मुद्रांकति है। पंजाबी और सधिी, इधर हन्दिी और उर्दू की प्रदेश-सीमाएँ कतिनी मलिी हुई हैं ! कतिु उनके अपने-अपने साहत्यि का वैशष्ट्यि कतिना प्रखर है ! इसी प्रकार गुजराती और मराठी का जन-जीवन परस्पर ओतप्रोत है, कतिु क्या उनके बीच में कसिी प्रकार की भ्रांतसिंभव है ! दक्षणि की भाषाओं का उद्गम एक है : सभी द्रवड़ि परविार की वभूतयिाँ हैं, परन्तु क्या कन्नड़ और मलयालम या तमलि और तेलुगु के स्वारूप्य के वषिय में शंका हो सकती है ! यही बात बँगला, असमयिा, और उड़यिा के वषिय में सत्य है। बँगाल के गहरे प्रभाव को पचाकर असमयिा और उड़यिा अपने स्वतंत्र अस्तत्वि को बनाये हुए हैं।

चेतनाकावकिास:

चेतनासामाजकिवातावरणकेसंपर्कसेवकिसतिहोतीहै।वातावरणकेप्रभावसेमनुष्यनैतकिता, औचत्यिऔरव्यवहारकुशलताप्राप्तकरताहै।इसेचेतनाकावकिासकहाजाताहै।वकिासकीचरमसीमामेंचेतनानजिस्वतंत्रताकीअनुभूतकिरतीहै।वहसामाजकिबातोंकोप्रभावतिकरसकतीहैऔरउनसेप्रभावतिहोतीहै, परंतुइसप्रभावसेअपनेआपकोअलगभीकरसकतीहै।चेतनाकोइसप्रकारकीअनुभूतकिोशुद्धचैतन्यअथवाप्रमाता, आत्माआदशिब्दोंसेसंबोधतिकयिाजाताहै।इसकीचर्चाचाल्र्सयुंग, स्पेंग्ल, वलियिमब्राउनआदविद्विानोंनेकीहै।इसेदेशकालकीसीमाकेबाहरमानागयाहै।

चेतनाकेस्तर:

चेतनाकेतीनस्तरमानेगएहैं :

चेतन, अवचेतनऔरअचेतन।चेतनस्तरपरवेसभीबातेंरहतीहैंजनिकेद्वाराहमसोचतेसमझतेऔरकार्यकरतेहैं।चेतनामेंहीमनुष्यकाअहंभावरहताहैऔरयहींवचिारोंकासंगठनहोताहै।अवचेतनस्तरमेंवेबातेंरहतीहैंजनिकाज्ञानहमेंतत्क्षणनहींरहता, परंतुसमयपरयादकीजासकतीहैं।अचेतनस्तरमेंवेबातेंरहतीहैंजोहमभूलचुकेहैंऔरजोहमारेयत्नकरनेपरभीहमेंयादनहींआतींऔरवशिषप्रक्रयिासेजन्हिेंयादकरायाजाताहै।जोअनुभूतयिाँएकबारचेतनामेंरहतीहैं, वेहीकभीअवचेतनऔरअचेतनमनमेंचलीजातीहैं।येअनुभूतयिाँसर्वथानष्क्रियिनहींहोतीं, वरन्मानवकोअनजानेहीप्रभावतिकरतीरहतीहैं।

वकिासकेचरण:

जन्मकालकेअतरिक्तिआधुनकिभारतीयसाहत्यिोंकेवकिासकेचरणभीप्रायः समानहीहैं।प्रायःसभीकाआदकिालपंद्रहवींशतीतकचलताहै।पूर्वमध्यकालकीसमाप्तमिुगल-वैभवकेअंतअर्थातशतीकेमध्यमेंतथासत्रहवींशतीकेमध्यमेंतथाउत्तरमध्याकालकीअंग्रेजीसत्ताकीस्थापनाकेसाथहोतीहैऔरतभीसेआधुनकियुगकाआरंभहोजाताहै।इसप्रकारभारतीयभाषाओंकेअधकिांशसाहत्यिोंकावकिास-क्रमलगभगएक-साहीहै; सभीप्रायःसमकालीनचारचरणोंमेंवभिक्तहैं।इससमानांतरवकिास-क्रमकाआधारअत्यंतस्पष्टहै, औरवहहैभारतकेराजनीतकिएवंसांस्कृतकिजीवनकावकिास-क्रम।

भारत की भाषाओं का परविार यद्यपि एक नहीं है, फरि भी उनका साहत्यिकि आधारभूमि एक ही है। रामायण, महाभारत, पुराण, भागवत, संस्कृत का अभजिात्य साहत्यि - अर्थात् कालदिास, भवभूति, बाण, श्रीहर्ष, अमरुक और जयदेव आदि की अमर कृतयिाँ, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश में लखिति बौद्ध, जैन तथा अन्य धर्मों का साहत्यि भारत की समस्त भाषाओं को उत्तराधकिार में मलिा। शास्त्र के अंतर्गत उपनषिद्, षड्दर्शन, स्मृतयिाँ आदि और उधर काव्यशास्त्र के अनेक अमर ग्रंथ—नाट्यशास्त्र, ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश, साहत्यिदर्पण रसगांधर आदि की वचिार-वभूति का उपयोग भी सभी ने नरिंतर कयिा है। वास्तव में आधुनकि भारतीय भाषाओं के ये अक्षय प्रेरणा-स्रोत हैं जो प्रायः सभी को समान रूप से प्रभावति करते रहे हैं। इनका प्रभाव नश्चिय ही अत्यंत समन्वयकारी रहा है और इनसे प्रेरति साहत्यि में एक प्रकार की मूलभूत समानता स्वतः ही आ गई है।—इस प्रकार समान राजनीतकि, सांस्कृतकि और साहत्यिकि आधारभूमि पर पल्लवति-पुष्पति भारतीय साहत्यि में जन्मजात समानता एक सहज घटना है।

सामाजिक चेतना:

देष व समाज की समस्याएं एक ही हैं यानी हमारे देष की जनता की समस्या ही हमारे समाज की समस्या है लेकिन जो देष की समस्याएं है। इन मुद्दों को, इन सामाजिक समस्याओं को समझ लेना अत्यन्त आवष्यक है इनके प्रति जागरुक होने से ही ये धीरे–धीरे समाधान की ओर अग्रसर होंगे।

सामाजकिपरविर्तनोंकाआधारउत्पादनकेसाधनऔरउससेप्रभावतिउत्पादनसंबंधोंमेंपरविर्तनहैं।अपनीप्रतभिाकेअनुसारमनुष्यसदैवकीउत्पादनकेसाधनोंमेंउन्नतकिरताहै, परंतुएकस्थतिआितीहैजबइसकारणउत्पादनसंबंधोंपरभीअसरपड़नेलगताहैऔरउत्पादनकेसाधनोंकेस्वामी-शोषक-औरइनसाधनोंकाप्रयोगकरनेवालाशोषतिवर्गमेंसंघर्षआरंभहोजाताहै।स्वामीपुरानीअवस्थाकोकायमरखकरशोषणकाक्रमजारीरखनाचाहताहै, परंतुशोषतिवर्गकाऔरसमाजकाहतिनएउत्पादनसंबंधस्थापतिकरनएउत्पादनकेसाधनोंकाप्रयोगकरनेमेंहोताहै।अत: शोषकऔरशोषतिकेबीचवर्गसंघर्षक्रांतकिारूपधारणकरताहैऔरउसकेद्वाराएकनएसमाजकाजन्महोताहै।इसीप्रक्रयिाद्वारासमाजआदकिालीनकबायलीसाम्यवाद, प्राचीनगुलामी, मध्यकालीनसामंतवाद औरआधुनकिपूँजीवाद, इनअवस्थाओंसेगुजराहै।अभीतककाइतहिासवर्गसंघर्षकाइतहिासहै, आजभीपूँजीपतिऔरसर्वहारावर्गकेबीचयहसंघर्षहै, जसिकाअंतसर्वहाराक्रांतद्विारासमाजवादकीस्थापनासेहोगा।भावीसाम्यवादीअवस्थाइससमाजवादीसमाजकाहीएकश्रेष्ठरूपहोगी।

वज्ञिान और साहत्यि के अंर्तसंबंधों की बात जब की जाती है तब यह ध्यान अवश्य रखा जाना चाहएि कि वज्ञिान, वज्ञिान है कला, कला। यहाँ बात

मैं अंर्तसंबंधों की कर हूँ स्थूल संबंधों की नहीं। साहत्यि पर वज्ञिान का प्रभाव रूपांतरति होकर पड़ता है सीधा नहीं। हाँ कहीं कभी यदि भावभूमि की जगह दृश्य चत्रिण होता है तब अवश्य वैज्ञानकि उपकरण या ये दृश्य साहत्यि में अंकति होते हैं जन्हिें साहत्यिकार देखता सुनता है।

नश्चिति रूप से वैज्ञानकि सोच और उसकी साहत्यिक परणितिही साहत्यि की वह लोकमंगला धारा है जसिसे मनुष्य वकिासकामी और प्रगतकिामी बनता है अन्यथा अर्नगल, दशिाहीन और अस्पष्ट साहत्यि यथार्थ से कोसों दूर मानव को कूप मण्डूक बनने में ही मदद करता है। यह अवैज्ञानकि साहत्यि होता है जो कुण्ठाओं, वकृितयों और दृष्टहिीनता से भरा होता है। वैज्ञानकि सोच न केवल तर्कों पर आधारति होता है बल्कि यथार्थ, भौतकि प्रयोग तथा गणतिीय और सांख्यकीय नष्किर्षों पर आधारति होता है। साहत्यि के संदर्भ में ये नष्किर्ष सीधे गणतिीय तथ्यों पर आधारति नहीं माने जा सकते। मनुष्य की अपनी एक जैवकि पहचान है वैचारकि अस्मति है। और अपने सहधर्मी, सहयोगी तथा सहकर्मी के ऊपर आश्रति होने का, वश्विास करने का, उससे स्नेह करने का भावनात्मक, और वैचारकि आधार भी है। अत: वैज्ञानकि साहत्यि की अवधारणा वज्ञिान की शब्दावली, नयिम या तथ्य मानने और उन्हें साहत्यि में उतारने की कतई नहीं है यह तो मात्र एक वषिय है। इससे कहीं आगे वैज्ञानकि साहत्यि वज्ञिान सम्मत यथार्थ और आदर्श तथा मानवीय संबंधों की भावभूमि पर ही रचा जा सकता है। मानवीय गरमिा, मानवीय चरत्रि का उदात्तीकरण और लोकमंगल मोटे मोटे प्रत्यय है जो वैज्ञानकि साहत्यि में समावष्टि होते हैं। इन्हें जतिनी अधकि कलात्मकता और अनुभूतकि की प्रगाढ़ता से साहत्यि में उतारा जा सकता है वही साहत्यिकार की सफलता का मानदण्ड होता हे।

आज वज्ञिान हमारी जीवन शैली का एक अभन्नि अंग है। आज बहुत कुछ समाज के सामने हैं। यद्यपि आज भी सत्ताधारी वर्ग के स्वार्थ हैं। सम्पन्नता की जीत है और सामर्थ्य का बोलबाला है परंतु फरि भी वज्ञिान हमारे दैनकि जीवन में एक महात्वपूर्ण भूमकिा का नर्विाह करने लगा है। यातायात के आधुनकि साधन, प्रौद्योगकिी का वकिास, उद्योग धंधे, उत्पादन, बजिली और प्रचार माध्यम, रसायन एवं औषधि वज्ञिान हमारे दैनंदनि जीवन का अंग बन चुके हैं। जहरि है समाज पर वज्ञिान की इतनी बड़ी पकड़ को साहत्यिकार भी नजर अंदाज नहीं कर सकता।